पारदर्शिता की मिसाल थे सुनील भाई

गोपाल राठी

समाजवादी जन परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री, प्रखर समाजवादी विचारक, अर्थशास्त्री एवं आदिवासी, किसानों, मजदूरों, विस्थापितों और युवकों के अनेक आंदोलन की अगुवाई करने वाले समाजवादी नेता और मासिक 'सामयिक वार्ता' के संपादक साथी सुनील का 21 अप्रैल, 2014 को रात 11.30 बजे दिल्ली के ऑल इंडिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस में निधन हो गया। 16 अप्रैल को केसला (होशंगाबाद), मध्य प्रदेश के अपने निवास पर उन्हें मस्तिष्क आघात हुआ और इसके बाद वे अचेतावस्था में चले गए।

1981 में दिल्ली में हुए समता युवजन सभा के पहले राष्ट्रीय सम्मेलन में साथी सुनील से पहली भेंट हुई थी और हम राजनैतिक संगी और दोस्त बन गए। उस समय सुनील जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में एम.ए. कर रहे थे और मैं स्नातक करके सिंचाई विभाग में अस्थाई नौकरी। सुनील ने तब से लेकर आज तक अपने नाम के साथ अपना गौत्र/जाति का कभी उल्लेख नहीं किया, उन्होंने विवाह भी अंतर्जातीय किया। आंदोलन में गिरफ्तारी के वक्त उनके पिता श्री रामप्रताप गुप्ता का उल्लेख होने के कारण लोगों को उनकी जाति की पहली बार जानकारी मिली। सुनील भाई सच्चे समाजवादी थे, वे जात-पांत और उसमें निहित विषमता के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने जीते जी कभी अपनी जाति/गौत्र का न उल्लेख किया और न अभिमान।

मंदसौर के रामपुरा में जन्मे (4 नवम्बर, 1959) सुनील ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा से लेकर स्नातक तक की पढ़ाई यहीं पूरी की। इसके बाद उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से अर्थशास्त्र विषय से एम.ए. (स्वर्ण पदक के साथ) की पढ़ाई पूरी की। अपना शोध कार्य बीच में ही छोड़कर मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के केसला क्षेत्र के गरीबों, आदिवासियों, महिलाओं के बीच 1981 में जमीनी कार्य शुरू किया। उन दिनों इस इलाके में देश के वरिष्ठ समाजवादियों की पहल पर 'लोहिया अकादमी' का गठन हुआ था और पास के ही इटारसी कस्बे के समाजवादी युवा स्व. राजनारायण ने आदिवासियों के बीच अपनी पैठ बना ली थी। स्व. राजनारायण और कुछ अन्य साथियों के साथ मिलकर सुनील भाई ने किसान आदिवासी संगठन बनाया। 1984 में वे पूर्ण रूप से केसला आकर बस गए और उन्होंने संघर्ष, रचना एवं चुनाव का समन्वय रखकर होशंगाबाद को कर्मस्थली बनाया। इसी दौरान समाजवादी आंदोलन की वरिष्ठ सहयोगी स्मिता के साथ उनका विवाह हुआ।

हम जिस समाज में रहते हैं वहां यह माना जाता है कि चिंतक, विचारक, लेखक, बुद्धिजीवी और आदर्शवादी लोग नीरस तथा बोरिंग होते हैं। इन सज्जनों से आम आदमी का संवाद सामान्य तौर पर नहीं होता। सुनील भाई इस सबके अपवाद थे। वे साधारण लोगों से मिलकर, बात करके खुश होते थे और मिलने वाला भी खुश होता था, चाहे वह दूसरी विचारधारा और पार्टी का ही क्यों न हो।

गांधी और लोहिया के विचारों को आत्मसात कर सुनील भाई ने सादगीपूर्ण जीवन बिताया। यूं तो सुनील भाई का कार्यक्षेत्र पूरा देश रहा है लेकिन उनका सघन कार्यक्षेत्र होशंगाबाद, हरदा तथा बैतूल रहे। उन्होंने युवजन सभा, समता संगठन के माध्यम से काम शुरू किया था जो वर्ष 1995 में किशन पटनायक के नेतृत्व में समाजवादी जन परिषद् राजनैतिक दल बना। छात्र जीवन में ही उन्होंने 'समता एरा' नामक बुलेटिन का प्रकाशन किया। दिल्ली में

लेखक परिचय

समाजवादी विचारधारा और किसान, मजदूर, आदिवासी एवं दलितों के आन्दोलनों से सक्रिय रूप से जुड़े हैं। 1985 से एकलव्य, भोपाल में विभिन्न भूमिकाओं में कार्यरत हैं।

ही उन्होंने छात्र संघ का चुनाव लड़ा। 2004 में उन्होंने होशंगाबाद लोकसभा क्षेत्र से सांसद का चुनाव लड़ा। आदिवासियों और वंचित तबके के कई आन्दोलनों को उन्होंने दिशा दी। तवा बांध विस्थापितों के संघर्ष का उन्होंने 1995 में नेतृत्व किया और बाद में देश के सबसे सफल मत्स्य सहकारी संघ का संचालन भी किया। हाल ही में उनका अंतिम आंदोलन होशंगाबाद के पास मालाखेड़ी में नारी जागृति मंच के साथ मिलकर शराब बंदी को लेकर था। 7 अप्रैल, 2014 को भोपाल में ही शिक्षा के अधिकार पर अपना अंतिम उद्‌बोधन दिया (शिक्षा विमर्श के इसी अंक में प्रकाशित)।

किसी देशी-विदेशी फंडिग एजेंसी पर निर्भर हुए बिना सुनील भाई जनता से प्राप्त चंदे से अपनी राजनैतिक एवं आंदोलन की गतिविधियां संचालित करते थे। विभिन्न कार्यक्रम, धरना, जुलूस, आंदोलन, चुनाव, यात्रा आदि के लिए गांवों और अन्य से एकत्रित चंदा का हिसाब-किताब कार्यक्रम खत्म होने के बाद तत्काल कार्यालय में चस्पा कर दिया जाता था या प्रिंट करके वितरित कर दिया जाता था। इसलिए सुनील भाई को अपने आंदोलन के लिए आर्थिक सहयोग मांगने में कोई हिचक नहीं होती थी। जब चुनाव में खड़े उम्मीदवार को अपनी संपत्ति और चुनाव खर्च को सार्वजनिक करने की कोई बाध्यता नहीं थी। उस समय सुनील के आग्रह पर समाजवादी जन परिषद् के प्रत्याशी फागराम ने अपनी चल-अचल संपत्ति को घोषणा कर सभी प्रत्याशियों को ऐसा करने को कहा था। फागराम के चुनाव मे खर्च (आवक-जावक) का पूरा ब्यौरा अखबार के माध्यम से सार्वजनिक किया गया था। आज भी चुनाव आयोग खर्च का विवरण मांगता है, खर्च किए गए धन का स्रोत नहीं पूछता। सार्वजनिक जीवन में जिस पारदर्शिता की अपेक्षा की जाती है, सुनील भाई उसमें एक दम खरे थे। 2014 के लोकसभा चुनावों में वे स्वयं समाजवादी जन परिषद् से होशंगाबाद-नरसिंहपुर सीट से उम्मीदवार थे।

सुनील भाई को कई बार आदिवासियों के सवालों को सामने रखने के लिए पुलिस यातना का शिकार होना पड़ा। वे कई बार जेल गए। 1983 में असम आंदोलन के समर्थन में दिल्ली से गुवाहाटी तक साइकिल यात्रा की। इसी दौरान ऑपरेशन ब्लूस्टार के अन्तर्गत सैनिक कार्यवाही, इंदिरा जी की हत्या के बाद सिख विरोधी दंगों ने युवा सुनील को उद्वेलित किया। 1984 में सिख विरोधी दंगों से दुखी होकर समता संगठन के नेतृत्व में दिल्ली से अमृतसर तक की पदयात्रा की। 1986 में हजारों आदिवासियों को साथ लेकर भौंरा (बैतूल) से भोपाल तक की पदयात्रा की। 1993 में केसला में पानी की समस्या को लेकर 'पानी लाओ संघर्ष मोर्चा' के तहत केसला- होशंगाबाद तक की पैदल यात्रा की। उन्होंने कई किताबें लिखीं, उनकी विशेषता यह थी कि उन्होंने छोटी-छोटी पुस्तकों से विश्व में चल रही आर्थिक अनियमितताओं और वंचितों के सवालों को आम जन के समझने लायक बनाया।

1984 में सिख दंगों के बाद उन्होंने दो किताबें लिखीं, उनमें से एक बहुत ही चर्चित रही। इसमें से एक का नाम था 'ये बर्बरता कहां छिपी हुई थी'। आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत में उन्होंने कई किताबें लिखीं। उन्होंने किशन पटनायक के आलेखों के संग्रहों का संपादन भी किया है, उनमें से एक किताब है 'विकल्पहीन नहीं है दुनिया'। हाल ही में आई उनकी एक किताब 'भ्रष्टाचार को कैसे समझें' बहुत ही चर्चित रही। इसके अलावा उन्होंने समसामयिक मुद्दों पर लगतार पैनी नजर के साथ और आम जन के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर लेखन किया। जनान्दोलनों के साथ देश भर में अलग-अलग जगहों पर चल रहे आन्दोलनों में सुनील भाई की सक्रिय भागीदारी थी। सुनील भाई की इच्छा थी कि सभी जनांदोलनों के बीच समन्वय रहे। उन्होंने 1982 में ही जनान्दोलन समन्वय समिति बनाई। उसके बाद भी वे जनान्दोलनों के राष्ट्रीय समन्वय (NAPM) और मध्य प्रदेश में जन संघर्ष मोर्चा के साथ सक्रिय रहे। मैं उनके संघर्ष में शामिल उनके साथियों की ओर से उनके सादगी और संघर्षपूर्ण जीवन को सलाम करते हुए श्रृद्धांजली अर्पित करता हूं। ◆